RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
नवम्बर
20
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index

Indian Green Building Council

By Ankit Avasthi Sir

पुतिन ने नई परमाणु नीति पर किए हस्ताक्षर / Putin signs new nuclear policy

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन **ने मंगलवार को** **नई संशोधित परमाणु नीति पर हस्ताक्षर किए। इस फैसले के तहत** रूस ने अपनी सुरक्षा के लिए परमाणु हथियारों के उपयोग को लेकर नए दिशा-निर्देश तय **किए हैं। आइए, इसे बिंदुवार समझते हैं:**

- **अगर कोई देश किसी परमाणु-संपन्न देश की सहायता से रूस पर हमला करता है, तो इसे रूस पर संयुक्त हमला माना जाएगा।**
- **ऐसी स्थिति में, रूस की सरकार को परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने का अधिकार होगा।**
- **इस नीति में परमाणु हथियार के उपयोग के लिए कुछ शर्तें भी जोड़ी गई हैं, जिन्हें अभी स्पष्ट नहीं किया गया है।**
- **यह फैसला रूस-यूक्रेन युद्ध के 1000 दिन पूरे होने के मौके पर लिया गया, जिससे इसकी रणनीतिक और प्रतीकात्मक अहमियत बढ़ गई है।**

रूस ने नई परमाणु नीति पर हस्ताक्षर क्यों किए?

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा संशोधित परमाणु नीति पर हस्ताक्षर करना एक रणनीतिक कदम है, जो बदलते वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृश्य का जवाब है। इसके पीछे प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

- ✓ **अमेरिका का फैसला**: जो बाइडन सरकार ने यूक्रेन को लंबी दूरी की मिसाइलों से रूस के भीतर हमले की मंजूरी दी है। यह कदम रूस की सुरक्षा के लिए सीधा खतरा है और इस पर रूस ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है।
- ✓ **यूक्रेन का मिसाइल उपयोग**: लेकिन अब उनके उपयोग की सीमा रूस के सैन्य अड्डों और अहम ठिकानों तक बढ़ गई है।
- ✓ **सुरक्षा के लिए आक्रामक नीति**: नई परमाणु नीति में प्रावधान किया गया है कि अगर रूस पर बड़े पैमाने पर हवाई हमला होता है, तो वह परमाणु हथियारों का उपयोग कर सकता है। यह कदम रूस की रक्षा क्षमताओं को और मजबूत करता है।
- ✓ **रूस-यूक्रेन युद्ध की स्थिति**: रूस-यूक्रेन युद्ध के **1000 दिन पूरे** होने के अवसर पर लिया गया यह फैसला संकेत देता है कि रूस इस संघर्ष में कोई ढील देने के मूड में नहीं है।
- ✓ **अमेरिका और नाटो का हस्तक्षेप**: रूस ने अमेरिका और नाटो पर यूक्रेन युद्ध को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है। नई परमाणु नीति रूस की ओर से शक्ति प्रदर्शन और प्रतिरोध का संकेत है।
- ✓ **भविष्य के खतरों से निपटने की तैयारी**: रूस ने इस नीति के जरिए यह स्पष्ट किया है कि वह किसी भी प्रकार के बड़े हमले का जवाब देने के लिए तैयार है, चाहे वह परंपरागत हो या परमाणु।

प्रमुख बदलाव:

1. **ड्रोन और अन्य हमलों पर प्रतिक्रिया:**
   - यदि कोई देश **रूस पर बड़े पैमाने पर ड्रोन हमला करता है, तो रूस इसे अपने खिलाफ युद्ध के रूप में मानेगा** और इसका जवाब न्यूक्लियर डेटरेंस (परमाणु हथियार) से दे सकता है।
   - क्रूज मिसाइल, बैलिस्टिक मिसाइल, या अन्य उड़ने वाले हथियारों से हमले की स्थिति में भी रूस परमाणु हथियारों का इस्तेमाल कर सकता है।
2. **अंतरिक्ष से खतरे पर प्रतिक्रिया:**
   - यदि रूस पर अंतरिक्ष से हमला होता है या हथियार भेजे जाते हैं, तो इसे रूस के खिलाफ जंग माना जाएगा।
   - ऐसी स्थिति में रूस अपने मिसाइल डिफेंस सिस्टम को सक्रिय करेगा और जरूरत पड़ने पर अंतरिक्ष में भी हमला कर सकता है।
3. **राष्ट्रीय सुरक्षा को प्राथमिकता:**
   - यदि रूस को अपनी सीमा या नागरिकों पर खतरा महसूस होता है, तो वह न्यूक्लियर मिसाइल और मिसाइल डिफेंस सिस्टम तैनात कर सकता है ताकि दुश्मन के हमलों का जवाब दिया जा सके।
4. **सहयोगी देशों पर प्रावधान में बदलाव:**
   - पूर्व नीति के तहत रूस अपने सहयोगी बेलारूस पर हमले की स्थिति में परमाणु हथियारों का इस्तेमाल कर सकता था, लेकिन संशोधित नीति में इस प्रावधान को हटा दिया गया है।

बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच समुद्री संबंधों की शुरुआत / Start of maritime ties between Bangladesh and Pakistan

1971 में पाकिस्तान से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, **बांग्लादेश और पाकिस्तान के रिश्तों में ऐतिहासिक प्रगति देखने को मिली है। पहली बार, पाकिस्तान का एक कार्गो जहाज बांग्लादेश के तट पर पहुंचा, जो दोनों देशों के बीच समुद्री संबंधों की शुरुआत का प्रतीक है।**

- ✓ बांग्लादेश की अंतरिम सरकार और पाकिस्तान के बीच यह सहयोग विदेश नीति में बड़े बदलाव का संकेत है।

मुख्य बिंदु-

समुद्री संबंधों की शुरुआत:

- कराची से बांग्लादेश के दक्षिण-पूर्वी तट पर पहली बार पाकिस्तान का कार्गो जहाज रुका।
- यह घटना दोनों देशों के बीच दशकों के तनाव के बाद समुद्री रिश्तों की शुरुआत का संकेत देती है।

बांग्लादेश की विदेश नीति में बदलाव:

- प्रो. मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार पाकिस्तान के साथ संबंध सुधारने की दिशा में काम कर रही है।
- यह कदम बांग्लादेश की विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है।

भारत-बांग्लादेश संबंधों पर टिप्पणी:

- भारत के उच्चायुक्त प्रणय वर्मा ने भारत और बांग्लादेश के बहुआयामी संबंधों पर जोर दिया।
- उन्होंने कहा कि भारत-बांग्लादेश का सहयोग किसी एक एजेंडे तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में फैला हुआ है।

क्षेत्रीय प्रभाव:

- बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच बढ़ते संबंधों से क्षेत्रीय कूटनीति में बदलाव हो सकता है।
- भारत और बांग्लादेश के बीच मजबूत व्यापार और सहयोग इस नई स्थिति में भी महत्वपूर्ण बना हुआ है।

भारत पर प्रभाव-

बदलाव का संकेत:

- नई अंतरिम सरकार, मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व में, पाकिस्तान-बांग्लादेश संबंधों में गर्मजोशी लाई है।
- यह कदम **1971 के बाद** इन जटिल संबंधों में ऐतिहासिक बदलाव को दर्शाता है।

भारत पर संभावित प्रभाव:

- भारत और बांग्लादेश के बीच **लंबी सीमा के कारण इस बदलाव का भारत की सुरक्षा पर सीधा** असर पड़ सकता है।
- पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच समुद्री संपर्क बनने से चरमपंथियों को **हथियार पहुंचाने या भारत विरोधी विद्रोही गुटों को समर्थन देने का खतरा** बढ़ सकता है।

भारत के लिए बांग्लादेश का महत्व-

भौगोलिक रणनीतिक महत्व: बांग्लादेश भारत का पूर्वी पड़ोसी है और बंगाल की खाड़ी तक पहुंच का रास्ता देता है।

- ✓ यह भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच व्यापार और कनेक्टिविटी का अहम मार्ग है।

भौगोलिक-राजनीतिक महत्व: बांग्लादेश की स्थिरता और दोस्ताना संबंध भारत की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।

- ✓ सीमा सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी सहयोग के लिए इसका सहयोग जरूरी है।
- ✓ भारत के संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में स्थायी सदस्यता के प्रयासों में बांग्लादेश का समर्थन अहम है।

आर्थिक महत्व: बांग्लादेश भारत के निर्यात और द्विपक्षीय व्यापार का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

- ✓ दोनों देशों के आर्थिक रिश्ते मजबूत होना **भारत के $5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के लक्ष्य** को पूरा करने में मदद करेगा।

सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंध: बांग्लादेश में हिंदू बंगाली समुदाय और भारत से जुड़े कई धार्मिक-सांस्कृतिक स्थल हैं, जैसे रानीर बंगलो मंदिर और भोज विहार।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग: BIMSTEC, SAARC और जलवायु परिवर्तन (COPs) जैसे क्षेत्रीय मंचों में बांग्लादेश का सहयोग सफलता के लिए जरूरी है।

करिमगंज का नाम बदलेगा 'श्रीभूमि' / Karimganj's name will be changed to 'Shri Bhoomi'

असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने घोषणा की है कि करिमगंज जिले का नाम बदलकर 'श्रीभूमि' रखा जाएगा। यह फैसला रवींद्रनाथ टैगोर को सम्मान देने और जनता की लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा करने के लिए लिया गया है।

मुख्य बिंदु:

नामकरण का कारण:
- रवींद्रनाथ टैगोर ने **करिमगंज को 'श्रीभूमि' यानी 'मां लक्ष्मी की भूमि' कहा था।**
- इस **ऐतिहासिक संदर्भ को सम्मान देने के लि**ए यह कदम उठाया गया।

असम कैबिनेट का निर्णय:
- राज्य मंत्रिमंडल ने जनता की मांग पर यह फैसला लिया।
- मुख्यमंत्री ने इसे राज्य की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

सांस्कृतिक महत्व:
- नाम बदलने से रवींद्रनाथ टैगोर की विरासत को याद किया जाएगा।
- यह क्षेत्र के गौरवशाली इतिहास को दर्शाने का प्रयास है।

औपनिवेशिक छापों से राष्ट्र को मुक्त करना

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उद्देश्य भारत को औपनिवेशिक सोच से मुक्त कर, भारत के गौरव और प्रतिष्ठा को बढ़ाना है। इसी दृष्टिकोण से उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में कई स्थानों और संस्थानों के नाम बदले हैं।

हालिया नाम परिवर्तन

- **पोर्ट ब्लेयर से श्री विजयपुरम**: केंद्र सरकार ने अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर का नाम बदलकर **श्री विजयपुरम** कर दिया।

घोषणा

सितंबर में गृह मंत्री अमित शाह ने इसे प्रधानमंत्री की "औपनिवेशिक छापों से राष्ट्र को मुक्त करने" की दृष्टि के अनुरूप बताया।

उद्देश्य

- भारत की **संस्कृति और इतिहास** को पुनर्जीवित करना।
- औपनिवेशिक नामकरणों से **दूरी बनाना** और भारत की पहचान को सुदृढ़ करना।

असम: पूर्वोत्तर भारत का प्रमुख राज्य

असम भारत के उत्तर-पूर्वी हिस्से में स्थित है। यह राज्य अपनी प्राकृतिक सुंदरता, जैव विविधता और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है।

मुख्य विशेषताएं

1. **क्षेत्रफल और जनसंख्या**:
   - असम का क्षेत्रफल 78,438 वर्ग किलोमीटर है।
   - यह क्षेत्रफल के अनुसार पूर्वोत्तर भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है और जनसंख्या के अनुसार सबसे बड़ा।
   - यहां 31 मिलियन से अधिक लोग रहते हैं।
2. **भौगोलिक स्थिति**:
   - उत्तर में भूटान और अरुणाचल प्रदेश,
   - पूर्व में नागालैंड और मणिपुर,
   - दक्षिण में मेघालय, त्रिपुरा, मिज़ोरम और बांग्लादेश,
   - पश्चिम में पश्चिम बंगाल (सिलीगुड़ी कॉरिडोर द्वारा)।
3. **राजधानी और प्रमुख शहर**:
   - असम की राजधानी **दिसपुर** है।
   - सबसे बड़ा शहर **गुवाहाटी** है।
4. **भाषाएं**:
   - आधिकारिक भाषाएं: असमिया और बोडो।
   - बराक घाटी और होजाई जिले में बंगाली और मणिपुरी (मैतेई) भी आधिकारिक भाषाएं हैं।

प्राकृतिक धरोहर

1. **राष्ट्रीय उद्यान**:
   - **काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान** और **मानस राष्ट्रीय उद्यान**: विश्व धरोहर स्थल।
   - **डिब्रू-सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान**: अपने जंगली घोड़ों के लिए प्रसिद्ध।
2. **जैव विविधता**:
   - एक सींग वाले गैंडे, जंगली भैंस, बाघ, एशियाई हाथी, और विभिन्न पक्षी प्रजातियों का घर।

तमिलनाडु के लिए केंद्रीय करों में 50% हिस्सेदारी की सीएम स्टालिन की मांग / CM Stalin demands 50% share in central taxes for Tamil Nadu

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री **एम.के. स्टालिन ने केंद्र सरकार से राज्य को केंद्रीय करों में 50% हिस्सेदारी देने की मांग** की है।

- ✓ उन्होंने केंद्रीय निधियों में कटौती और केंद्र प्रायोजित परियोजनाओं के लिए बढ़ते खर्च के कारण राज्य पर पड़ रहे वित्तीय दबाव पर चिंता व्यक्त की।
- ✓ मुख्यमंत्री ने कहा कि तमिलनाडु जैसे अच्छे प्रदर्शन करने वाले राज्यों को देश के समग्र विकास के लिए अतिरिक्त धनराशि आवंटित की जानी चाहिए।

मुख्य बिंदु:

राज्यों की हिस्सेदारी बढ़ाने की मांग:

- ✓ तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने **राज्यों की कर हिस्सेदारी को 50% तक बढ़ाने की अपील** की।
- ✓ वर्तमान में यह **हिस्सा 33.16% है, जबकि 15वें वित्त आयोग ने 41% की सिफारिश** की थी।

राज्यों पर बढ़ता वित्तीय बोझ:

- ✓ केंद्र-राज्य की संयुक्त परियोजनाओं में राज्यों की भागीदारी बढ़ी है।
- ✓ सेंट्रल टैक्स में तमिलनाडु का हिस्सा 7.93% (9वें आयोग) से घटकर 4.07% (15वें आयोग) हो गया है।
- ✓ यह उन राज्यों के लिए अनुचित है जो बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।

विभाज्य कर पूल (Divisible Tax Pool) क्या है?

- ✓ यह केंद्र सरकार द्वारा संग्रहित करों का वह हिस्सा है जो राज्यों और केंद्र के बीच बांटा जाता है।
- ✓ संविधान के **अनुच्छेद 270 के तहत यह व्यवस्था** की गई है।
- ✓ इसमें **कॉर्पोरेशन टैक्स, व्यक्तिगत आयकर, सेंट्रल GST, और IGST जैसे कर** शामिल हैं।
- ✓ लेकिन इसमें उपकर (Cess) और अधिभार (Surcharge) शामिल नहीं होते।

मुद्दे और चिंताएं:

- **उपकर और अधिभार**: ये केंद्र के सकल कर राजस्व का 23% हैं लेकिन विभाज्य पूल में शामिल नहीं होते, जिससे राज्यों का हिस्सा घटकर 32% रह जाता है।
- **राजस्व असमानता**: विकसित राज्य, जैसे तमिलनाडु, योगदान के मुकाबले कम प्राप्त करते हैं जबकि उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों को अधिक हिस्सेदारी मिलती है।
- **दक्षिणी राज्यों की गिरावट**: दक्षिणी राज्यों का हिस्सा पिछले 6 वित्त आयोगों में लगातार कम हुआ है।
- **अनुदान में अंतर**: स्थानीय निकायों और विभिन्न क्षेत्रों के लिए अनुदान राज्यों में असमान रूप से वितरित होते हैं।

सुधाव और समाधान:

- **उपकर और अधिभार शामिल करें**: विभाज्य पूल में इनका एक हिस्सा जोड़ा जाए और इनके उपयोग को कम किया जाए।
- **प्रभावशीलता को प्राथमिकता दें**: GST योगदान को एक मापदंड बनाकर बेहतर प्रदर्शन करने वाले राज्यों को अधिक वरीयता दी जाए।
- **राज्यों की भागीदारी बढ़ाएं**: वित्त आयोग में राज्यों के लिए जीएसटी काउंसिल की तरह एक औपचारिक व्यवस्था बनाई जाए।
- **राजकोषीय संघवाद मजबूत करें**: राज्यों को स्थानीय विकास के लिए अधिक संसाधन आवंटित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

हाई-परफॉर्मेंस बिल्डिंग्स / High-Performance Buildings

हाई-परफॉर्मेंस बिल्डिंग्स (HPBs): टिकाऊ निर्माण की ओर कदम-

हाई-परफॉर्मेंस इमारतें (HPBs) आज के दौर में सतत विकास और बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने का प्रमुख समाधान हैं। **जलवायु परिवर्तन और शहरीकरण की चुनौतियों से निपटने के लिए ये इमारतें ऊर्जा दक्षता, संसाधनों के संरक्षण और चरम मौसम का सामना करने की क्षमता से लैस होती हैं।** ये टिकाऊ निर्माण और पर्यावरण संतुलन की ओर एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

क्या हैं हाई-परफॉर्मेंस बिल्डिंग्स (HPBs):

हाई-परफॉर्मेंस बिल्डिंग्स ऐसी इमारतें होती हैं जिन्हें ऊर्जा उपयोग, जल संरक्षण, वायु गुणवत्ता, और संसाधन दक्षता जैसे क्षेत्रों में उच्च मानकों को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ये इमारतें लंबी अवधि की संचालन क्षमता और आर्थिक स्थिरता को भी ध्यान में रखती हैं।

- **ऊर्जा दक्षता**: पारंपरिक इमारतों की तुलना में ये इमारतें ऊर्जा की खपत को काफी कम करती हैं।
- **सस्टेनेबिलिटी (टिकाऊपन):** ये टिकाऊ सामग्रियों का उपयोग करती हैं, जल बचाने वाली तकनीकों को अपनाती हैं, और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करती हैं।
- **मजबूती और अनुकूलता**: ये इमारतें बदलते पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल होती हैं और जलवायु चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होती हैं। इनमें बाढ़-रोधी डिज़ाइन, ऊर्जा बैकअप सिस्टम और टिकाऊ सामग्रियों का उपयोग किया जाता है।

जरूरत क्यों है HPBs की?

- **कार्बन उत्सर्जन:** इमारतें वैश्विक ऊर्जा-आधारित उत्सर्जन का 28% योगदान करती हैं। भारत में यह आंकड़ा 20% है।
- **शहरीकरण:** 2030 तक भारत की शहरी आबादी 600 मिलियन तक पहुँचने का अनुमान है, जिससे ऊर्जा-कुशल इन्फ्रास्ट्रक्चर की मांग बढ़ेगी।
- **वैश्विक लक्ष्य:** 2030 तक इमारतों में 30% ऊर्जा दक्षता सुधार का लक्ष्य पाने के लिए तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता है।

महत्व:

1. **कम संचालन लागत**: ऊर्जा और जल की खपत कम होने से परिचालन खर्च में कमी आती है।
2. **स्वास्थ्य और आराम**: इन इमारतों में बेहतर इनडोर वायु गुणवत्ता और आराम मिलता है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है और स्वास्थ्य समस्याएँ कम होती हैं।
3. **पर्यावरण संरक्षण**: ये इमारतें कार्बन उत्सर्जन कम करती हैं, कचरा उत्पादन घटाती हैं और कम संसाधनों का उपयोग करती हैं।
4. **अर्थव्यवस्था**: इनकी उच्च पुनर्विक्रय कीमत और किरायेदारों की संतुष्टि इन्हें अधिक आकर्षक बनाती है।
5. **शहरीकरण में समाधान**: ये इमारतें टिकाऊ और कम-कार्बन अर्थव्यवस्था की दिशा में भारत को अग्रसर करती हैं।

ऊर्जा-कुशल इमारतों के लिए भारत की पहलें:

1. **इको-निवास संहिता**: ऊर्जा-कुशल आवासीय इमारतों के लिए एक कोड।
2. **ऊर्जा संरक्षण भवन कोड (ECBC):** व्यावसायिक इमारतों के लिए ऊर्जा प्रदर्शन मानक।
3. **ऊर्जा संरक्षण (संशोधन) अधिनियम, 2022:** विभिन्न क्षेत्रों में ऊर्जा दक्षता बढ़ाने का लक्ष्य।
4. **नीरमन अवार्ड्स**: ऊर्जा-कुशल इमारतों में नवाचार को मान्यता।
5. **ग्रीन रेटिंग फॉर इंटीग्रेटेड हैबिटेट असेसमेंट (GRIHA)**: टिकाऊ निर्माण प्रथाओं को बढ़ावा देता है।

चुनौतियाँ:

1. **संचालन की उपेक्षा**: प्रारंभिक लागत पर ध्यान देने से दीर्घकालिक संचालन दक्षता नजरअंदाज हो जाती है।
2. **विविध डिज़ाइन**: इमारतों के विभिन्न प्रकारों में ऊर्जा दक्षता को मानकीकृत करना मुश्किल है।
3. **विभाजित प्रोत्साहन**: मालिकों और किरायेदारों के बीच लाभ में असमानता ऊर्जा-कुशल सुधारों को कम समर्थन देती है।
4. **स्थानीय ज्ञान का नुकसान**: विदेशी तकनीकों पर अधिक निर्भरता स्थानीय सस्ती तकनीकों को हाशिए पर रखती है।

छत्तीसगढ़ का गुरु घासीदास-तमोर पिंगला बना देश का 56वां बाघ अभ्यारण्य / Guru Ghasidas-Tamor Pingla of Chhattisgarh became the 56th tiger reserve of the country

केंद्रीय पर्यावरण मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने छत्तीसगढ़ में गुरु घासीदास-तमोर पिंगला टाइगर रिजर्व को भारत के 56वें टाइगर रिजर्व के रूप में अधिसूचित करने की घोषणा की है।

मुख्य बिंदु

- **घोषणा की तारीख**: केंद्र सरकार ने 18 नवंबर को इसे देश का 56वां बाघ अभ्यारण्य घोषित किया।
- **नया बाघ अभ्यारण्य**: गुरु घासीदास-तमोर पिंगला।
- **क्षेत्रफल**: यह अभ्यारण्य 2,829 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।
- **स्थान**: यह छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में स्थित है।
- **नामकरण**: इसका नाम सतनामी सुधारक गुरु घासीदास के नाम पर रखा गया है।
- **पहले से मौजूद अभ्यारण्य**: छत्तीसगढ़ में पहले से तीन बाघ अभ्यारण्य हैं–
  - इंद्रावती (बीजापुर)।
  - उदंती-सीतानदी (गरियाबंद)।
  - अचानकमार (मुंगेली)।
- **स्थलाकृति और जलवायु**: इसकी स्थलाकृति लहरदार है।

अधिसूचना का महत्व

- ✓ **प्रोजेक्ट टाइगर के तहत**: यह अधिसूचना राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) की सिफारिश के अनुरूप है।
- ✓ **अंतिम मंजूरी**: अक्टूबर 2021 में NTCA ने इसे अधिसूचित करने की अंतिम मंजूरी दी।
- ✓ **बाघ अभयारण्यों की संख्या में वृद्धि**: इसके साथ ही छत्तीसगढ़ में बाघ अभयारण्यों की कुल संख्या चार हो गई है।
- ✓ **बाघ संरक्षण में योगदान**: यह अधिसूचना राज्य के बाघ संरक्षण प्रयासों को मजबूत बनाती है।

भारत के बाघ संरक्षण में गुरु घासीदास-तमोर पिंगला की भूमिका

- **बाघ संरक्षण में प्रगति:**
  - ✓ **भारत में विश्व की 70% से अधिक बाघ आबादी निवास करती है। देश ने बाघ संरक्षण में उल्लेखनीय प्रगति की है।**
- **प्रोजेक्ट टाइगर का समर्थन:**
  - ✓ **यह रिजर्व प्रोजेक्ट टाइगर के लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता करता है।**
  - ✓ **बाघों और उनके आवासों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।**
- **मध्य भारत में बाघों की आबादी में वृद्धि:**
  - ✓ **मध्य भारत में बाघों की संख्या बढ़ाकर मानव-वन्यजीव संघर्षों को कम करता है।**
  - ✓ **क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण करता है।**

गुरु घासीदास-तमोर पिंगला की प्रमुख विशेषताएँ

- **भौगोलिक विशेषता**: **छोटा नागपुर पठार** में स्थित यह क्षेत्र विविध भू-आकृति और समृद्ध वनस्पति के लिए जाना जाता है। यह बाघों और अन्य प्रजातियों के लिए **उत्तम आवास** प्रदान करता है।
- **संरक्षण के लाभ**: प्रोजेक्ट टाइगर के तहत **एनटीसीए से तकनीकी और आर्थिक सहयोग** मिलता है। इसका उद्देश्य बाघों और अन्य प्रजातियों के **संरक्षण को सुदृढ़** करना है।
- **सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्व**: यह रिजर्व **छत्तीसगढ़ में सतत विकास और जैव विविधता संरक्षण** के बीच संतुलन बनाने में सहायक है। राज्य की **पर्यावरणीय प्रतिबद्धता** को दर्शाता है।

भारत में बाघ अभयारण्य: प्रोजेक्ट टाइगर का योगदान

1. **प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत:**
   - प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत 1973 में बाघ संरक्षण के उद्देश्य से हुई थी।
   - इन अभयारण्यों का प्रशासन **राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA)** द्वारा किया जाता है।
2. **वर्तमान स्थिति (2024 तक):**
   - भारत में अब तक 56 संरक्षित क्षेत्रों को बाघ अभयारण्य घोषित किया गया है।
   - 2023 तक, भारत में **3,682 जंगली बाघ** हैं, जो दुनिया की कुल जंगली बाघ आबादी का **लगभग 75%** है।
3. **बाघ अभयारण्य की संरचना:**
   - बाघ अभयारण्य में **कोर क्षेत्र** (राष्ट्रीय उद्यान या वन्यजीव अभयारण्य) और **बफर ज़ोन** (वन और गैर-वन भूमि का मिश्रण) शामिल होते हैं।
   - कोर क्षेत्र बाघों की आबादी के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है।
   - बफर ज़ोन में इंसानों और जानवरों के सह-अस्तित्व को बढ़ावा दिया जाता है।
4. **प्रारंभिक प्रगति:**
   - **1973 में** 9 बाघ अभयारण्य स्थापित किए गए थे।
   - **1980 के** दशक तक, संरक्षित क्षेत्र **9,115 वर्ग किमी से बढ़कर 24,700 वर्ग किमी** हो गया।
   - **1984 तक**, इन क्षेत्रों में **1,100 बाघों** की उपस्थिति दर्ज की गई।
5. **विस्तार और उपलब्धियां:**
   - **1997 तक**, भारत में 23 बाघ अभयारण्यों का क्षेत्रफल **33,000 वर्ग किमी** तक पहुंच गया।
   - **वर्तमान में**, 56 बाघ अभयारण्य भारत के बाघ संरक्षण प्रयासों को मजबूत बना रहे हैं।

निष्कर्ष

भारत के बाघ अभयारण्य न केवल बाघों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं, बल्कि जैव विविधता और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभाते हैं।

भारत एनसीएक्स 2024 / India NCX 2024

भारत राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा अभ्यास (भारत एनसीएक्स 2024) साइबर सुरक्षा को मजबूत करने और देश की साइबर रक्षा क्षमताओं को उन्नत बनाने के लिए शुरू की गई एक ऐतिहासिक पहल है।

मुख्य बिंदु

- **उद्घाटन समारोह**: भारत राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा अभ्यास (भारत एनसीएक्स 2024) का उद्घाटन एक उच्च-स्तरीय समारोह में किया गया।
- **आयोजनकर्ता**: यह पहल राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय (एनएससीएस) द्वारा राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय (आरआरयू) के सहयोग से आयोजित की जा रही है।
- **अभ्यास का उद्देश्य**:
  - ✓ भारत की साइबर रक्षा क्षमताओं को बढ़ाना।
  - ✓ साइबर सुरक्षा चुनौतियों के लिए पेशेवरों को तैयार करना।
- **अभ्यास की अवधि**: 12 दिनों तक चलने वाला यह अभ्यास। 18 नवंबर से 29 नवंबर, 2024 तक।

- **प्रशिक्षण फोकस**:
  - ✓ साइबर रक्षा में उन्नत कौशल।
  - ✓ घटना प्रतिक्रिया (Incident Response)
  - ✓ रणनीतिक निर्णय लेने की क्षमता।
- **मुख्य लाभ**
  - ✓ उभरते साइबर खतरों का प्रभावी मुकाबला।
  - ✓ सरकार, शिक्षा और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग को मजबूत करना।
  - ✓ नवाचार और स्वदेशी समाधान को प्रोत्साहन।
  - ✓ साइबर संकट प्रबंधन में नेतृत्व क्षमताओं का विकास।
- **लेफ्टिनेंट जनरल एमयू नायर का उद्घाटन भाषण**: भारत एनसीएक्स 2024 का उद्देश्य साइबर रक्षकों को जटिल खतरों से निपटने में दक्ष बनाना है। यह पहल संकट प्रबंधन की तैयारी सुनिश्चित करती है।
- **प्रो. (डॉ.) बिमल एन. पटेल का मुख्य भाषण**: उन्होंने साइबर सुरक्षा चुनौतियों से निपटने में शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के एकीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया। यह अभ्यास तकनीकी कौशल को बढ़ाने के साथ-साथ शीर्ष नेतृत्व को भी तैयार करता है।

भारत के सामने प्रमुख साइबर खतरे और सुरक्षा उपायों की स्थिति

1. प्रमुख साइबर खतरे

- **रैनसमवेयर का प्रकोप**: हालिया *WannaCry* रैनसमवेयर हमलों में 48,000 से अधिक मामले सामने आए।
- **फिशिंग हमले**: 2023 में 79 मिलियन से अधिक फिशिंग हमले दर्ज।
- **आपूर्ति शृंखला हमले**: सोलरविंड्स जैसे हमलों ने सॉफ़्टवेयर शृंखला की कमजोरियों को उजागर किया।
- **क्रिप्टो अपराध**: वज़ीरएक्स जैसे मामलों में क्रिप्टो संपत्तियाँ खतरे में।
- **डीपफेक तकनीक का दुरुपयोग**: 2024 चुनाव अभियान के दौरान भ्रामक वीडियो से सामाजिक अस्थिरता।
- **साइबर सुरक्षा पेशेवरों की कमी**: भारत में 8 लाख पेशेवरों की कमी, खासकर AI और क्लाउड सुरक्षा में।

2. सरकारी पहल और रणनीतियाँ

- राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति (NCSP)
- भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C)
- कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (CERT-In)
- डिजिटल डेटा संरक्षण अधिनियम 2023
- साइबर स्वच्छता केंद्र

3. सुझाव और सुधार की दिशा

- शिक्षा और जागरूकता
- सशक्त साइबर सुरक्षा ढाँचे का निर्माण
- नए पेशेवरों का प्रशिक्षण

मैग्नस कार्लसन ने टाटा स्टील शतरंज इंडिया टूर्नामेंट में ब्लिट्ज़ खिताब जीता / Magnus Carlsen wins Blitz title at Tata Steel Chess India tournament

दुनिया के नंबर एक शतरंज खिलाड़ी, मैग्नस कार्लसन, ने शानदार प्रदर्शन करते हुए टाटा स्टील शतरंज इंडिया टूर्नामेंट में ब्लिट्ज़ खिताब जीत लिया।

मुख्य बिंदु:

- **मैग्नस कार्लसन** ने एक दौर पहले ही **ब्लिट्ज़ खिताब** जीत लिया।
- कार्लसन ने **विदित गुजराती** को हराकर टूर्नामेंट का शानदार समापन किया।
- **13 अंक** के साथ लगातार तीन जीत के बाद कार्लसन ने 'ब्लिट्ज़' का ताज अपने नाम किया।
- 2019 के बाद, **कोलकाता** में दूसरी बार दो खिताब जीतने में सफल रहे।
- **वेस्ली सो** ने शानदार वापसी करते हुए **11.5 अंक** के साथ दूसरा स्थान हासिल किया।
- भारतीय खिलाड़ी **अर्जुन एरिगैसी** ने **10.5 अंक** के साथ तीसरा स्थान प्राप्त किया।
- अन्य भारतीय खिलाड़ी **आर प्रज्ञानानंदा (9.5 अंक)** चौथे और **विदित गुजराती (9 अंक)** पांचवे स्थान पर रहे।
- महिला वर्ग में **कैटरीना लैग्नो** ने **11.5 अंक** के साथ जीत दर्ज की।
- एलेक्जेंड्रा गोर्याचकिना (रूस) और भारत की वंतिका अग्रवाल 9.5 अंकों के साथ संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर रहीं।

मैग्नस कार्लसन:

मैग्नस कार्लसन का पूरा नाम **स्वेन मैग्नस अर्वेन कार्लसन** है। वह नॉर्वे के एक महान शतरंज खिलाड़ी हैं और अपनी रणनीतिक सोच और खेल के प्रति गहरी समझ के लिए जाने जाते हैं।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

- **जन्म**: 30 नवंबर 1990
- **स्थान**: टॉन्सबर्ग, वेस्टफोल्ड, नॉर्वे
- कार्लसन ने केवल 10 वर्ष की आयु से शतरंज खेलना शुरू कर दिया था।
- **13 वर्ष** की आयु में उन्होंने **ग्रैंडमास्टर** का खिताब प्राप्त कर दुनिया को अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

FIDE रेटिंग:

- कार्लसन ने 2014 में **2882 FIDE रेटिंग** हासिल की, जो अब तक की सबसे ऊंची शतरंज रेटिंग है।
- वह 125 से अधिक क्लासिकल गेम्स में **लगातार अजेय रहने** का रिकॉर्ड रखते हैं।

टाटा स्टील चेस इंडिया शतरंज टूर्नामेंट: प्रमुख जानकारी

1. **परिचय**:
   टाटा स्टील चेस इंडिया शतरंज टूर्नामेंट कोलकाता में आयोजित होने वाला एक प्रतिष्ठित शतरंज टूर्नामेंट है। यह मुख्य रूप से **रैपिड** और **ब्लिट्ज** प्रारूपों में खेला जाता है।
2. **स्थान**:
   इस टूर्नामेंट का आयोजन कोलकाता के **धनधान्य ऑडिटोरियम** में किया जाता है।
3. **शुरुआत**:
   - 2018 में इस टूर्नामेंट का पहला संस्करण आयोजित किया गया था।
   - हिकारू नाकामुरा ने रैपिड सेक्शन में जीत दर्ज की।
   - ब्लिट्ज सेक्शन में पूर्व विश्व चैंपियन **विश्वनाथन आनंद** ने नाकामुरा के खिलाफ प्लेऑफ में जीत हासिल की।
4. **विशेषताएं**:
   - यह टूर्नामेंट भारत के शतरंज खिलाड़ियों और अंतरराष्ट्रीय सितारों को एक मंच प्रदान करता है।
   - यह आयोजन न केवल खेल को बढ़ावा देता है, बल्कि भारत को शतरंज के वैश्विक मानचित्र पर स्थापित करता है।
5. **महत्त्व**:
   - भारत में शतरंज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका।
   - उभरते खिलाड़ियों को दिग्गज खिलाड़ियों से सीखने का अवसर।

निष्कर्ष:
टाटा स्टील चेस इंडिया शतरंज टूर्नामेंट न केवल भारत में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय शतरंज परिदृश्य में भी एक प्रमुख आयोजन है।

स्पेसएक्स ने स्टारशिप का छठा परीक्षण किया / SpaceX conducted the sixth test of Starship

दुनिया के सबसे ताकतवर रॉकेट 'स्टारशिप' का छठा टेस्ट बुधवार को भारतीय समयानुसार सुबह 3:30 बजे टेक्सास के बोका चिका से सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया।

मुख्य बिंदु

1. **स्टारशिप का छठा टेस्ट**
   - टेक्सास के बोका चिका से लॉन्च किया गया।
   - नवनिर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भी टेस्ट देखा।
2. **लैंडिंग प्रक्रिया**
   - बूस्टर को लॉन्चपैड पर कैच करने का प्रयास किया गया।
   - तकनीकी कारणों से बूस्टर को पानी में लैंड कराया गया।
   - स्टारशिप के इंजन को स्पेस में दोबारा चालू कर हिंद महासागर में लैंडिंग की गई।
3. **स्पेसएक्स की सफलता**
   - इंजन रीस्टार्ट करने की क्षमता कंपनी के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है।
   - भविष्य में इसका उपयोग डीऑर्बिट बर्न में होगा।
4. **वैल्यूएबल डेटा प्राप्त हुआ**
   - हायर एंगल ऑफ अटैक पर फ्लाई करने से फ्लैप कंट्रोल और थर्मल प्रोटेक्शन सिस्टम का डेटा मिला।
   - इस डेटा से स्टारशिप के डिजाइन और सिस्टम्स में सुधार संभव होगा।

पांचवें टेस्ट की प्रमुख जानकारी

1. **लॉन्चपैड पर बूस्टर कैच**
   - स्टारशिप का पांचवां टेस्ट 13 अक्टूबर को हुआ।
   - पहली बार सुपर हैवी बूस्टर को 96 किमी ऊपर भेजकर लॉन्चपैड पर वापस लाया गया।
   - बूस्टर को 'मैकेजिला' ने कैच किया, जो दो मेटल आर्म्स (चॉपस्टिक्स जैसी) हैं।
2. **री-एंट्री और लैंडिंग**
   - स्टारशिप ने पृथ्वी के वायुमंडल में री-एंट्री कर हिंद महासागर में कंट्रोल्ड लैंडिंग की।
   - री-एंट्री के समय रफ्तार 26,000 किमी/घंटा और तापमान 1,430°C तक पहुंचा।
3. **स्टारशिप और सुपर हैवी इंजन**
   - स्टारशिप में 6 रैप्टर इंजन और सुपर हैवी में 33 रैप्टर इंजन लगे हैं।

स्टारशिप: एक परिचय

स्टारशिप एक अत्याधुनिक रॉकेट और अंतरिक्षयान प्रणाली है जिसे **स्पेसएक्स** (SpaceX) द्वारा डिजाइन और विकसित किया गया है। यह भविष्य के अंतरग्रहीय मिशनों जैसे **चंद्रमा**, **मंगल ग्रह**, और **गहरे अंतरिक्ष अन्वेषण** के लिए बनाया गया है। स्टारशिप का उद्देश्य भारी पेलोड ले जाना और मानव को अंतरिक्ष में सुरक्षित रूप से भेजना है।

स्पेस एक्सप्लोरेशन टेक्नोलॉजीज कॉर्पोरेशन (स्पेसएक्स):

- **एलन मस्क** द्वारा स्थापित।
- **2002** में स्थापित।
- यह एक **अमेरिकी एयरोस्पेस** निर्माता और अंतरिक्ष परिवहन सेवा कंपनी है।
- यह **उपग्रह (2010 में ड्रैगन) लॉन्च** करने वाली **पहली निजी** कंपनी है।
- स्पेसएक्स ने **एक ही मिशन में 143 उपग्रहों को प्रक्षेपित कर** नया विश्व रिकॉर्ड बनाया।

स्टारशिप की मुख्य विशेषताएं

1. **संरचना और डिजाइन**
   - **दो-भागीय प्रणाली**:
     - **सुपर हैवी बूस्टर**: लॉन्च के लिए आवश्यक प्रारंभिक थ्रस्ट प्रदान करता है।
     - **स्टारशिप स्पेसक्राफ्ट**: पेलोड और यात्रियों को ले जाने वाला मुख्य भाग।
   - दोनों भाग स्टेनलेस स्टील से बने हैं और पुन: उपयोग योग्य (reusable) हैं।
2. **इंजन**
   - **रैप्टर इंजन**:
     - सुपर हैवी बूस्टर में 33 रैप्टर इंजन हैं।
     - स्टारशिप में 6 रैप्टर इंजन हैं।
     - ये इंजन तरल मीथेन (Liquid Methane) और तरल ऑक्सीजन (Liquid Oxygen) का उपयोग करते हैं।
3. **पेलोड क्षमता**
   - स्टारशिप लगभग **150 टन तक का पेलोड** पृथ्वी की निचली कक्षा (LEO) में ले जा सकता है।
   - इसे भविष्य में **100 से अधिक यात्रियों** को मंगल ग्रह तक ले जाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।